आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज

प्रज्ञा पुजारी

विद्यार्थी, केएलईच्या जी. आय. बागेवाडी कला, विज्ञान आणि वाणिज्य महाविद्यालय, निपाणी.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263884

ABSTRACT:

यह आलेख आधुनिक हिंदी साहित्य (19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से) और समाज के बीच अटूट संबंध का विश्लेषण करता है, जहाँ साहित्य समाज के दर्पण और मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना के प्रभाव से जन्मी आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ राष्ट्रीयता, सामाजिक सुधार, और यथार्थवादी चित्रण रहीं। प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों ने किसानों और दलितों के जीवन को केंद्र में लाकर सामाजिक विषमताओं को उजागर किया। लेख में विशेष रूप से महिला पात्र के बदलते स्वरूप पर जोर दिया गया है, जो पारंपरिक गृहिणी से सशक्त और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व में परिवर्तित हुई है। साहित्यकारों ने स्त्री-विमर्श को स्वर दिया, जिससे दहेज और लैंगिक असमानता जैसे गंभीर सामाजिक मुद्दे समाज के सामने आए। निष्कर्षतः, आधुनिक हिंदी साहित्य ने सामाजिक जागृति पैदा करने और एक प्रगतिशील, न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

KEYWORDS:

आधुनिक हिंदी साहित्य, समाज सुधार, स्त्री-विमर्श, राष्ट्रीय चेतना, यथार्थवाद.

१) प्रस्तावना

मानव सभ्यता का इतिहास केवल घटनाओं, युद्धों और शासन परिवर्तन का इतिहास नहीं है। बल्कि यह उस मानसिकता का भी दर्पण है जो समय-समय पर समाज में व्यक्त रही मनुष्य की भावनाएँ, विचार, कल्पनाएँ और संवेदनाएँ ही उसकी संस्कृति का आधार बनती है। इन्हीं का कलात्मक, रचनात्मक और अभिव्यक्त रूप साहित्य कहलाता है। साहित्य समाज का दर्पण भी है और उसका मार्गदर्शक भी। समाज की खुशियाँ, दु:ख, संघर्ष, उत्सव, परंपराएँ और परिवर्तन सभी साहित्य में प्रतिबिंबित होते हैं। इसीलिए साहित्य और समाज का संबंध गहन, अभिन्न और परस्पर पूरक है।

"साहित्य" शब्द से मिलने के भाव का बोध होता है। वह केवल भाव-भाव का, भाषा-भाषा का, ग्रंथ-ग्रंथ का मिलना नहीं अपितु मानव के साथ मानव का, अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का अत्यंत अंतरंग मिलन भी है, जो कि साहित्य के अतिरिक्त किसी अन्य विधा में मिलना संभव नहीं है। - [१]

साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। साहित्यकार समाज का ही एक अंग होता है। वह समाज में ही जन्म लेता है, समाज में ही रहकर वह चिंतन और मनन करता है। समाज से प्रभाव ग्रहण करके ही वह साहित्य रचना करता है।

"डॉ. गुलाब राय ने जीवनधारा की आनंदमयी अभिव्यक्ति को साहित्य की संज्ञा दी है। साहित्य के द्वारा साहित्यकार अपने समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है, इसीलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है।" - [२]

समाज और साहित्य के संबंध के विषय में "डॉ. श्यामसुंदर दास" के विचार द्रष्टव्य हैं - "सामाजिक मस्तिष्क अपने पोषण के लिए जो भाव-सामग्री निकालकर समाज को सौंपता है, उसके संचित भंडार का नाम साहित्य है।" - [३]

मनुष्य की सामाजिक स्थिति के विकास में साहित्य का प्रधान योग रहता है। "साहित्यकार समाज को दिशा प्रदान करता है। समाज में बहुत से लोग घटिया प्रवृत्ति के होते हैं। वे समाज वर्ग का विरोध करते

हैं। साहित्य जनता के हृदय से अज्ञानांधकार दूर करता है तथा उसकी सुप्त आत्मा को जाग्रत करता है। साहित्यकार अपने साहित्य के द्वारा क्रांति को जन्म दे सकता है। महान साहित्यकार जन-समाज के हृदय-परिवर्तन की क्षमता रखता है।"

अनेक विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि साहित्य का समाज से विशेष संबंध नहीं होता। वे विद्वान् 'कला कला के लिए' के सिद्धांत में आस्था रखते हैं। वस्तुतः साहित्य समाज से कहीं-न-कहीं अवश्य जुड़ा रहता है। महान साहित्यकारों का साहित्य देश-कालातीत हो जाता है। कालिदास, तुलसी, सूर, कबीर, टॉलस्टॉय तथा शेक्सपियर आदि ऐसे ही साहित्यकार हैं, जिनके साहित्य का संबंध पूर्ण मानव-समाज से है।

कबीर ने अपने समय के आडंबरप्रिय तथा धार्मिकता का ढोंग करने वाले व्यक्तियों को फटकारते हुए कहा -

"मुखड़ा क्या देखे दरपन,
तेरे दया धर्म नहीं मन में।
ऐंठी धोती, पागल पेटी, तेल चुआ
चुलफन में, गली-गली की सखी रिझाई, दाग लग-या तन में।"

आदिकाल के साहित्य से ज्ञात होता है कि तत्कालीन राजा किस प्रकार युद्धों के प्रति रूचि रखते थे। आदिकालीन साहित्य यह स्पष्ट करता है कि उस समय, "जाकी बिटिया सुंदर देखी, ता पर जय धारितलवारी" की स्थिति थी।

आधुनिक युग का साहित्य वर्तमान समाज की दशा उभारने में सक्षम है। साहित्य और समाज का अटूट संबंध है। साहित्य का लक्ष्य मानव-कल्याण है और मानव समाज की इकाई है। इस प्रकार स्पष्ट है कि साहित्य और समाज के संबंध को चुनौती नहीं दी जा सकती।

२) आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज

1. आधुनिक हिंदी साहित्य का उद्भव

आधुनिक हिंदी साहित्य का आरंभ 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से माना जाता है। इस काल में भारत में नवजागरण की लहरें चलीं, अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार हुआ और स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना भी लोगों में जाग्रत होने लगी। साहित्यकारों ने समाज की समस्याओं, राष्ट्रीय चेतना,

स्वतंत्रता की आकांक्षा और जन-जागरण को अपने लेखन का आधार बनाया।

2. प्रमुख विशेषताएँ

» राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता चेतना - भारतेंदु हरिश्चंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचंद आदि ने स्वतंत्रता संग्राम को अपनी रचनाओं में स्वर दिया।

» सामाजिक सुधार - बाल विवाह, दहेज प्रथा, स्त्री शिक्षा, छुआछूत, जातिगत विषमता जैसे मुद्दे साहित्य में उठाए गए।

» यथार्थवादी - प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों में किसानों, मजदूरों और गरीब वर्ग का जीवन चित्रण हुआ।

» मानवतावाद और प्रगतिशीलता - प्रगतिवाद आंदोलन ने समाजवादी दृष्टिकोण और सामाजिक समानता का स्वर साहित्य में लाया।

» नयी कविता और प्रयोगवाद - स्वतंत्रता के बाद नयी कविता ने व्यक्ति की संवेदनाओं, अस्तित्व की पीड़ा और बदलते समाज की जटिलताओं को अभिव्यक्ति दी।

3. समाज पर प्रभाव

» आधुनिक हिंदी साहित्य ने समाज में जागृति और सुधार की भावना जगाई।

» इसने राष्ट्र को स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रेरित किया।

» महिलाओं की स्थिति, श्रमिकों और किसानों की समस्याओं पर सहानुभूति और चेतना का विकास किया।

» साहित्य ने समाज को लोकतांत्रिक और मानवीय दृष्टि प्रदान की।

» भाषा को सरल, सहज और जनभाषा के निकट लाकर समाज में संपर्क और एकता बढ़ाई।

३) आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज में महिला का पात्र

आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज में महिला का पात्र बहुत ही महत्वपूर्ण और बहुआयामी रूप में सामने आया है। इसे मुख्य बिंदुओं में

समझ सकते हैं:

1. परंपरा से आधुनिकता की ओर परिवर्तन

» प्रारंभिक साहित्य में स्त्री का चित्रण अधिकतर गृहिणी, त्यागमूर्ति और आदर्शवादी रूप में मिलता है।

» आधुनिक युग में स्त्री केवल गृह की सीमा तक सीमित नहीं, बल्कि उसने सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक क्षेत्रों में अपनी भूमिका निभाई।

2. नारी-स्वतंत्रता और व्यक्तित्व की पहचान

» आधुनिक हिंदी साहित्य में महिला अब निर्बल नहीं बल्कि सशक्त और आत्मनिर्भर रूप में चित्रित होती है।

» लेखिकाएँ जैसे-महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा आदि ने नारी की संवेदनाओं, संघर्ष और स्वतंत्र सोच को स्वर दिया।

3. समाज में महिला की बदलती भूमिका

» शिक्षा और रोजगार ने स्त्री को समाज में नई पहचान दी।

» वह अब सिर्फ़ परिवार की रक्षक नहीं बल्कि समाज-निर्माण में बराबर की सहभागी है।

» राजनीतिक, साहित्य, कला, विज्ञान और पत्रकारिता तक में स्त्रियों का योगदान दिखता है।

4. स्त्री-विमर्श और नारी आंदोलन

» आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श एक महत्वपूर्ण धारा के रूप में उभरकर आया।

» इसमें महिला-शोषण, दहेज-प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, लैंगिक असमानता जैसे मुद्दे उठाए गए।

» साहित्यकारों ने महिला को विरोध की शक्ति और आवाज उठाने वाली के रूप में प्रस्तुत किया।

5. साहित्य और समाज का परस्पर प्रभाव

» समाज की बदलती सोच साहित्य में झलकती है और साहित्य समाज को दिशा देती है।

» आधुनिक साहित्य ने महिला को स्वतंत्र सोच, अधिकारों और समानता की चेतना दी।

» समाज में अब महिला निर्माण, संघर्ष और नेतृत्व की भूमिका में देखी जा रही है। बल्कि जब भी हम लड़कियों के दु:खों की बात करते हैं अक्सर कहते हैं कि न जाने उन्हें ससुराल में क्या-क्या सहना पड़े; लेकिन यहाँ बताना जरूरी है कि लड़कियाँ ससुराल तो बाद में जाती हैं। पहला अन्याय तो उसके साथ उसी वक्त शुरू हो जाता है जब वे पैदा होती हैं और खुशी की जगह आँसू बहाए जाते हैं। जिस घर में वे जन्मती हैं, जहाँ का रक्त, मांस, मज्जा, कोश वे अपने अंदर समेटे होती हैं, वही घर उन्हें सबसे अधिक घृणा करता है। कहता कोई बेशक यह रहे कि जी! हम तो लड़कियों को देवियाँ मानते हैं और शास्त्रों में लिखा है- "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता";। जिस हिसाब से पिछले दिनों गर्भ में लड़कियों को मारा गया है उस हिसाब से तो उन घरों से देवताओं को कूच कर जाना चाहिए। हाल ही की जनसंख्या रिपोर्ट ने बताया है कि स्त्रियों की संख्या प्रति हजार पुरुषों के मुकाबले कुछ ही साल में 935 से 827 हो गई है।

एक अच्छी खबर यह है कि दुनिया भर में कामकाजी स्त्रियों की संख्या बढ़ रही है। यूनिफेम ने दुनिया की स्त्रियों की प्रगति रिपोर्ट 2000 जारी की थी। इसमें बताया गया था कि बीजिंग में हुए अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव पर तमाम सरकारों के प्रतिनिधि महिला विकास कार्यक्रमों पर सहमत हुए थे। इसमें लक्ष्य को रखा गया था कि प्राइमरी शिक्षा के स्तर पर स्कूल जाने वाले लड़के-लड़कियों में जो अंतर है उसे सन् 2005 तक कम कर दिया जाएगा। इसे महिला सशक्तिकरण और समानता के रूप में तीन सबसे अधिक संवेदनशील क्षेत्र रेखांकित किया गया- 1. सेकेंडरी स्कूलों में लड़कियों और लड़कों का पंजीकरण, 2. गैर-कृषि क्षेत्रों (उद्योग और सेवा) में सवैतनिक काम करने वाली महिलाओं की संख्या, तथा 3. लोकसभा में स्त्रियों का प्रतिशत।

४) निष्कर्ष

आधुनिक हिंदी साहित्य समाज का दर्पण है। इसमें स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना, सामाजिक सुधार, महिला मुक्ति, जाति-विरोध, मानवतावाद आदि साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से प्रकट की। इसी कारण आधुनिक हिंदी साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि समाज को दिशा देने वाला मार्गदर्शक बना। निष्कर्ष यह है कि आधुनिक हिंदी साहित्य ने समाज की समस्याओं को उजागर कर परिवर्तन की चेतना जगाई और आज भी यह समाज को प्रगतिशील, न्यायपूर्ण और मानवीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.